हमारे अस्तित्व की पहचान है मातृ भाषा- कुलपति प्रोफेसर शुक्ल
अंतरराष्ट्रीय मातृ भाषा दिवस पर हिंदी विश्वविद्यालय में विशेष समारोह का आयोजन

वर्धा, 24 फरवरी : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में 21 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय मातृ भाषा दिवस के अवसर पर एक विशेष समारोह का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम महादेवी वर्मा सभागार में संपन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल ने की। समारोह के संयोजक डॉ. अवधेश कुमार तथा सह-संयोजक डॉ. रामानुज अस्थाना और डॉ. हरीश हुनगुंद थे। समारोह का उद्देश्य भाषाई विविधता और मातृ भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्धन को बढ़ावा देना था। इस अवसर पर वक्ताओं ने मातृ भाषा के महत्व, उसकी समृद्धि और सांस्कृतिक पहचान में उसकी भूमिका पर विचार प्रस्तुत किए। समारोह की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन और विश्वविद्यालय के कुलगीत गायन और माननीय कुलपति के स्वागत से हुई। इसके उपरांत कार्यक्रम के संयोजक तथा साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता डॉ. अवधेश कुमार ने स्वागत भाषण और विषय प्रवर्तन किया जिसमें उन्होंने मातृ भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला और कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। संवाद संगोष्ठी में दूर शिक्षा निदेशालय के एसोशिएट प्रोफेसर डॉ. अमरेंद्र शर्मा ने हिंदी भाषा की महत्ता पर अपने विचार प्रकट किए। अनुवाद अध्ययन विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. मीरा निचळे ने मराठी भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला। भाषा विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. विजया सिंह ने मगही भाषा में अपनी बात रखी। भाषा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. हरीश हुनगुंद ने कन्नड़ भाषा के महत्व पर अपनी बात रखी। शोधार्थी धरित्री स्वाई ने उड़िया भाषा में अपने विचार प्रकट किए। जनसंचार विभाग के विद्यार्थी विवेक रंजन सिंह ने अवधी भाषा के साहित्य पर प्रकाश डाला। विद्यार्थी अभय दुबे ने भोजपुरी भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला। दूर शिक्षा निदेशालय के एसोशिएट प्रोफेसर डॉ. शंभू जोशी ने राजस्थानी साहित्य के बारे में बताया। सहायक प्रोफेसर डॉ. ज्योतिष पाएंग ने असमिया भाषा में अपने विचार रखे।कोलकाता केंद्र के एसोशिएट प्रोफेसर डॉ. अमित राय ने बुंदेली भाषा के गौरव के बारे में बताया। हिंदी साहित्य विभाग के डॉ. उमेश कुमार सिंह ने ब्रज भाषा के ऐतिहासिक स्वरूप के बारे में बताया। डॉ. जगदीश नारायण तिवारी ने संस्कृत भाषा का महत्व रेखांकित किया। धनंजय भट्टाचार्य ने बांग्ला भाषा में अपनी बात रखी। डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी ने उर्दू भाषा के महत्व को रेखांकित किया।

मातृ भाषा दिवस समारोह के अध्यक्ष के रूप में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल ने भारतीय भाषाओं के अस्तित्व और उनके संरक्षण की अनिवार्यता पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि एक पूरी संस्कृति का वाहक होती है। मातृ भाषा हमारे अस्तित्व की पहचान होती है। उन्होंने वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भाषाई विविधता के महत्व को रेखांकित किया और भारत जैसे बहुभाषी देश में मातृ भाषा के संरक्षण के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में मातृ भाषाओं के महत्व को समझा गया है। भारतीय भाषाओं की स्थिति और उनके समक्ष चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए प्रोफेसर शुक्ल ने मातृ भाषा के प्रति जागरूकता फैलाने और नई पीढ़ी को इसके प्रति संवेदनशील बनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

समारोह में विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया। उन्होंने विभिन्न मातृ भाषाओं में कविताएँ और निबंध प्रस्तुत किए, जिससे भाषाई विविधता की सुंदरता झलक रही थी। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. हरीश हुनगुंद ने दिया, जिसमें उन्होंने सभी अतिथियों, वक्ताओं और प्रतिभागियों को उनके योगदान के लिए आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। यह समारोह मातृ भाषा के प्रति जागरूकता बढ़ाने और उसे सहेजने के संकल्प के साथ संपन्न हुआ।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा